International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in December 2024, ISSN -2393-8048

भारतेन्दु काल के साहित्य की वर्तमान में प्रासंगिकता

वन्दना शर्मा, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर
डॉ. दीपक शर्मा, सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

शोध का सारांश

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक हिंदी साहित्य के युगप्रवर्तक माने जाते हैं। उनके साहित्य ने हिंदी भाषा और समाज को एक नई दृष्टि दी। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब भारतीय समाज अंग्रेज़ी दासता, सामाजिक कुरीतियों, निरक्षरता और जातिगत भेदभाव जैसी चुनौतियों से जूझ रहा था, उस समय भारतेन्दु ने अपने साहित्य को सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय जागरण और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का माध्यम बनाया।

उनके साहित्य की प्रमुख विशेषता यह थी कि उन्होंने हिंदी को साधारण जन–भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया और इसे जन–जागरण का औज़ार बनाया। भारतेन्दु ने अपनी कविताओं, नाटकों, निबंधों और पत्रिकाओं के माध्यम से जनसाधारण तक राष्ट्रीय चेतना पहुँचाई। "भारत–दुर्दशा" जैसे नाटक और उनके निबंध आज भी हमें अंग्रेज़ी शासन के शोषण और उस समय की सामाजिक विडंबनाओं का आभास कराते हैं।

वर्तमान समय में भी जब समाज नए संकटों–भ्रष्टाचार, असमानता, सांस्कृतिक संकट, पर्यावरणीय समस्याएँ और मानवीय मूल्यों के ह्रास से जूझ रहा है, तब भारतेन्दु काल का साहित्य अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होता है। इसमें निहित राष्ट्रीय एकता, सामाजिक न्याय, स्त्री–शिक्षा, धर्मनिरपेक्षता और सांस्कृतिक अस्मिता जैसे मूल्य आज भी हमारे मार्गदर्शक हैं।

इस शोध का सार यह है कि भारतेन्दु साहित्य केवल अतीत का गौरव नहीं, बल्कि वर्तमान समाज की समस्याओं के समाधान का भी आधार है। यह शोध यह स्थापित करने का प्रयास करता है कि साहित्य केवल ऐतिहासिक धरोहर नहीं है, बल्कि वह हर युग की आवश्यकता और प्रेरणा है।

शोध कुंजी : राष्ट्रीय एकता, सामाजिक न्याय, स्त्री–शिक्षा, धर्मनिरपेक्षता, सांस्कृतिक, अस्मिता, गौरव, अतीत, संकट, भ्रष्टाचार, असमानता, सांस्कृतिक संकट, पर्यावरणीय समस्याएँ, मानवीय मूल्य, दासता, सामाजिक कुरीतियाँ, निरक्षरता, जातिगत भेदभाव, चुनौतियाँ, सरल, सहज आदि

शोध की प्रस्तावना

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का काल (19वीं शताब्दी का उत्तरार्ध) हिंदी साहित्य में आधुनिकता का आरंभ माना जाता है। इस युग में भारत सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से भारी उथल–पुथल के दौर से गुजर रहा था। अंग्रेज़ी साम्राज्य का विस्तार, सामाजिक कुरीतियाँ, स्त्री–शिक्षा की कमी, जातिगत भेदभाव और राष्ट्रभक्ति की चेतना का अभावकृये सभी समस्याएँ समाज को जकड़े हुए थीं।

इन्हीं परिस्थितियों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन न मानकर, उसे सामाजिक जागरण, राजनीतिक चेतना और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण का हथियार बनाया। उन्होंने हिंदी भाषा को सरल, सहज और जनभाषा बनाकर समाज की चेतना को जगाने का कार्य किया। उनके नाटक, निबंध, कविताएँ और पत्रकारिता ने समाज को नई दिशा दी।

भारतेन्दु युग का साहित्य केवल तत्कालीन भारत की समस्याओं का दर्पण नहीं था, बल्कि उसमें ऐसे मूल्य और विचार निहित थे जो आज भी उतने ही महत्वपूर्ण और प्रासंगिक हैं। वर्तमान समय में जब भारतीय समाज भ्रष्टाचार, वैश्वीकरण से उत्पन्न सांस्कृतिक संकट, सामाजिक असमानता, पर्यावरणीय असंतुलन और मानवीय मूल्यों के क्षय जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है, तब भारतेन्दु का साहित्य हमें समाधान और मार्गदर्शन प्रदान करता है।

इस शोध की प्रस्तावना का मूल आशय यही है कि भारतेन्दु साहित्य का अध्ययन केवल ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उसे आज के सामाजिक–राजनीतिक संदर्भों में पुनः देखा और समझा जाना चाहिए।

शोध का सोपान

शोध का प्रारंभिक भाग जिसमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के साहित्य और युग–परिस्थितियों का परिचय दिया गया है। इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि 19वीं शताब्दी में हिंदी साहित्य किस प्रकार सामाजिक चेतना और राष्ट्रीय भावना का माध्यम बना।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि – इस भाग में उस काल की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दशा का विवरण है। विशेष रूप से अंग्रेज़ी शासन, सामाजिक असमानता, और भारतीय संस्कृति पर पड़े प्रभावों को रेखांकित किया गया है।

भारतेन्दु साहित्य की विशेषताएँ – राष्ट्रभक्ति और स्वाधीनता चेतना, सामाजिक सुधार की आकांक्षा, भाषा की सरलता और जनसुलभता, पत्रकारिता और जनजागरण का योगदान, सांस्कृतिक पुनर्जागरण।

भारतेन्दु साहित्य और वर्तमान समय –इस खंड में साहित्य के आधुनिक संदर्भों से साम्य स्थापित किया गया है। जैसे – लोकतंत्र में भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरण, स्त्री शिक्षा और समानता की आवश्यकता, पर्यावरणीय और सामाजिक मूल्यों की रक्षा, भारतीय संस्कृति और भाषाई अस्मिता का संरक्षण। भारतेन्दु साहित्य केवल ऐतिहासिक महत्व का नहीं है, बल्कि वर्तमान समय में भी उसकी प्रासंगिकता उतनी ही जीवंत और आवश्यक है।

शोध का महत्व

भारतेन्दु काल हिंदी साहित्य का आधुनिक युग का आधार–स्तंभ माना जाता है। इस शोध का महत्व निम्नलिखित बिंदुओं में निहित है–

(क) साहित्यिक महत्व – यह शोध स्पष्ट करता है कि भारतेन्दु ने हिंदी भाषा को आधुनिक रूप प्रदान किया। उनके साहित्य के माध्यम से यह ज्ञात होता है कि किस प्रकार उन्होंने कविता, नाटक, गद्य और पत्रकारिता को एक नई दिशा दी। वर्तमान हिंदी साहित्य का स्वरूप उनके योगदान का प्रत्यक्ष परिणाम है।

(ख) सामाजिक महत्व – भारतेन्दु साहित्य सामाजिक कुरीतियों, अशिक्षा, स्त्री–दासता और जातिगत विषमता के विरुद्ध आवाज़ उठाता है। यह शोध समाज को यह बताने में सहायक होगा कि कैसे साहित्य केवल कलात्मक साधन न होकर सामाजिक परिवर्तन का साधन भी हो सकता है। आज भी जब समाज कई विकृतियों से ग्रस्त है, यह साहित्य हमें प्रेरणा देता है।

(ग) राजनीतिक और राष्ट्रीय महत्व – भारतेन्दु युग में राष्ट्रीय चेतना का बीजारोपण हुआ। इस शोध का महत्व इस तथ्य में है कि आज के भारत में जब लोकतंत्र भ्रष्टाचार, असमानता और नैतिक संकटों से गुजर रहा है, तब भारतेन्दु का साहित्य सत्य, ईमानदारी और राष्ट्रप्रेम के मूल्यों को पुनः स्थापित करने में सहायक हो सकता है।

(घ) सांस्कृतिक महत्व –भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भारतीय संस्कृति, धर्म और परंपराओं को आधुनिकता के साथ संतुलित करने का कार्य किया। यह शोध इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि आज के वैश्वीकरण और सांस्कृतिक विघटन के युग में भारतीय संस्कृति की जड़ों को मजबूत करने के लिए भारतेन्दु साहित्य मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

(ङ) शैक्षिक महत्व – यह शोध विद्यार्थियों, शोधार्थियों और हिंदी साहित्य के अध्येताओं के लिए उपयोगी है। यह उन्हें हिंदी साहित्य के विकासक्रम को समझने और साहित्य की वर्तमान सामाजिक–राजनीतिक संदर्भों में प्रासंगिकता को परखने का अवसर देता है।

शोध का महत्व केवल साहित्यिक अध्ययन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज, संस्कृति और राष्ट्र की चेतना को पुनर्जीवित करने की दिशा में भी सार्थक योगदान देता है।

शोध के उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि भारतेन्दु कालीन साहित्य केवल 19वीं शताब्दी की परिस्थितियों तक सीमित नहीं था, बल्कि वह आज के समाज और राष्ट्र के लिए भी उतना ही प्रासंगिक है। इस उद्देश्य को निम्न बिंदुओं में स्पष्ट किया जा सकता है–

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और उनके समकालीन लेखकों ने जिस प्रकार सामाजिक कुरीतियों, शोषण और अन्याय के विरुद्ध कलम चलाई, उसी प्रकार आज के संदर्भ में भी साहित्य को सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में पुनः परिभाषित करना इस शोध का उद्देश्य है।
- भारतेन्दु साहित्य में राष्ट्रीयता की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस शोध का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि स्वतंत्र भारत में यह साहित्य आज भी राष्ट्रभक्ति, कर्तव्य और जन–जागरण के संदेश देने में कितना सक्षम है।
- भारतेन्दु ने भारतीय संस्कृति को आधुनिकता के साथ जोड़ने का कार्य किया। शोध का उद्देश्य यह स्थापित करना है कि भारतीय संस्कृति के संरक्षण के लिए भारतेन्दु का साहित्य वर्तमान समय में भी मार्गदर्शक है।
- यह शोध यह दिखाना चाहता है कि भारतेन्दु साहित्य विद्यार्थियों और समाज के लिए नैतिक शिक्षा, साहित्यिक चेतना और आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करने का साधन है।

- आज का समाज भ्रष्टाचार, भौतिकवाद और नैतिक पतन से जूझ रहा है। शोध का उद्देश्य यह देखना है कि भारतेन्दु साहित्य किस प्रकार इन चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करता है और आधुनिक युग की समस्याओं से निपटने में सहायक है।
  शोध का उद्देश्य यह सिद्ध करना है कि भारतेन्दु कालीन साहित्य केवल ऐतिहासिक धरोहर नहीं, बल्कि आज के समय का भी मार्गदर्शक और प्रेरणास्त्रोत है।

शोध का निष्कर्ष

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को हिंदी साहित्य का आधुनिक युग प्रवर्तक कहा जाता है। उन्होंने साहित्य को समाज का दर्पण ही नहीं, बल्कि सुधार और जागरण का सशक्त साधन भी बनाया। इस शोध से यह निष्कर्ष स्पष्ट होता है कि भारतेन्दु कालीन साहित्य केवल 19वीं शताब्दी की चुनौतियों और समस्याओं तक सीमित नहीं है, बल्कि उसकी प्रासंगिकता आज के 21वीं सदी के भारत में भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

उनके साहित्य में सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार, स्त्री–शिक्षा और स्त्री–जागरण की चेतना, राष्ट्रभक्ति का आह्वान, राजनीतिक स्वतंत्रता का आह्वान और भारतीय संस्कृति के मूल्यों का संरक्षणकृये सभी पहलू वर्तमान समाज की समस्याओं और चुनौतियों से सीधे जुड़ते हैं।

आज जब समाज भौतिकवाद, सांस्कृतिक विघटन, नैतिक पतन और राष्ट्रीय मूल्यों के ह्रास से गुजर रहा है, तब भारतेन्दु का साहित्य हमें चेतावनी और समाधान दोनों प्रदान करता है। उनकी रचनाएँ हमें यह सिखाती हैं कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक–राजनीतिक चेतना और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का आधार स्तंभ है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारतेन्दु कालीन साहित्य की वर्तमान में प्रासंगिकता केवल साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन में भी अत्यधिक है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और उनके समकालीन साहित्यकारों का साहित्य आज भी भारत को एक सशक्त, नैतिक और सांस्कृतिक रूप से जागरूक राष्ट्र बनाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 हिन्दी जाति का साहित्य, डॉ० रामविलास शर्मा, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1986
2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (आलोचना) नये संदर्भ की तलाश, श्री नारायन पाण्डेय, शब्द भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1988
3. हिन्दी भाषा और साहित्य पर अंग्रेजी प्रभाव, डॉ० विश्वनाथ मिश्र, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1956–1963
4. भारतेन्दु कालीन साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, डॉ० कमला कनोडिया, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1961
5. भारतेन्दु का हिन्दी आन्दोलन, डॉ० कमलाकर तिवारी, नागरी प्रचारिणी पत्रिका,
6. भारतेन्दु : पुनर्मूल्यांकन के परिदृश्य, सम्पादक, कृष्ण कुमार शर्मा, रामवीर सिंह, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, 1987
7. नागरी प्रचारिणी पत्रिका, अक्टूबर–1978
8. भारतेन्दु युग (भूमिका), डॉ० राम विलास शर्मा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, तृतीय संस्करण, 1956–63
9. भारतेन्दु और भारतीय नवजागरण, शम्भूनाथ और अशोक जोशी, आने वाला कल प्रकाशन, कलकत्ता, प्रथम संस्करण, 1980
10. आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास, डॉ० कृष्ण लाल, हिन्दी परिषद, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, चतुर्थ संस्करण, 1965
11. भारतेन्दु और उनके सहयोगी कवि, किशोरी लाल गुप्त, हि०प्र०मन्दिर, आगरा, प्रथम संस्करण, द्वितीय संस्करण, 1956–1961